



भारतीय
प्रौद्योगिकी
संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय



INDIAN
INSTITUTE OF
TECHNOLOGY
BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)

राष्ट्रीय
सहारा
सूचना • सहाय • सहानुभूति

Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)

दिनांक : 09.01.2019

शहरी खनन एवं धातु निष्कर्षण में रसायन विज्ञान का महत्व विषय पर व्याख्यान स्काटलैंड के वैज्ञानिकों ने ई-कचरा निस्तारण के सुझाए उपाय

व्याराणसी (एसएनबी)। भारत सरकार के विवि अनुदान आयोग (यूजीसी) एवं यूनाइटेड किंगडम के ब्रिटिश कौंसिल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित यूके इंडिया रिसर्च एंड एजुकेशन इनिशिएटिव योजना के तहत एडिनवरा विवि (स्काटलैंड) के दो

स्काटलैंड से आये वैज्ञानिकों ने ई-कचरा के निस्तारण के उपाय सुझाए।

डा. कैरोल ने ई-कचरा की जटिलता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ई-कचरा बहुमूल्य धातुओं का स्रोत हैं। इन्हें निकालना एक दुरूह कार्य है। इस संदर्भ

किया जा सकता है। उन्होंने कहा सोने का प्राकृतिक अयस्क एक टन में 1-5 ग्राम सोना दे सकता है। जब कि ई-कचरा की क्षमता 300 ग्राम सोना उत्पन्न करने की है। भारतीय सहयोगी प्रो. कमलेश सिंह ने प्रोजेक्ट की महत्ता बताते हुए कहा कि इसके माध्यम से भारत तथा यूनाइटेड किंगडम दोनों देशों के लिए समान रूप से उपयोगी है। साथ ही इन कचरे से जूझ रहे पूरे विश्व के लिए उपयोगी है। दोनों देशों की संयुक्त टीम रिसाइक्लिंग की 2020 तक नवीन तकनीक विकसित कर रही है। जो पर्यावरण अनुकूल होने के साथ-साथ न्यूनतम अपशिष्ट उत्पन्न करेगी जिसे पुनः प्रयोग किया जा सकेगा। साथ ही सन 2020 में एक अंतरराष्ट्रीय सम्मलेन आयोजित करने की योजना है। इसमें अनुसंधान से प्राप्त निष्कर्षों को ई-कचरा के निस्तारण में संलग्न कंपनियों एवं अनुसंधान कर्ताओं को एक मंच प्रदान करेगा, ताकि सम्मिलित रूप से इस समस्या का समाधान किया जा सके। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. टीआर मानखंड तथा धन्यवाच ज्ञान प्रो. कमलेश सिंह ने किया। इस मौके पर विभागाध्यक्ष प्रो. एनके मुखोपाध्याय, प्रो. वकील सिंह, प्रो. आरके मंडल आदि मौजूद रहे।



वैज्ञानिकों (प्रो. जैसन एवं डा. कैरोल) का दल आईआईटी, वीएचयू का भ्रमण किया। इस मौके पर वैज्ञानिकों ने 'शहरी खनन एवं धातु निष्कर्षण में रसायन विज्ञान का महत्व' विषयक व्याख्यान दिये।

में रसायन मॉडलिंग की उपयोगिता बढ़ जाती है और इसके माध्यम से इस समस्या को हल करना चाहिए। प्रो. जैसन ने कहा ई-कचरा में उपस्थित लगभग सभी तत्वों को प्राप्तकर पुनः चक्रण के माध्यम से प्रयुक्त